विलियम टैल

लियोनार्ड फिशर

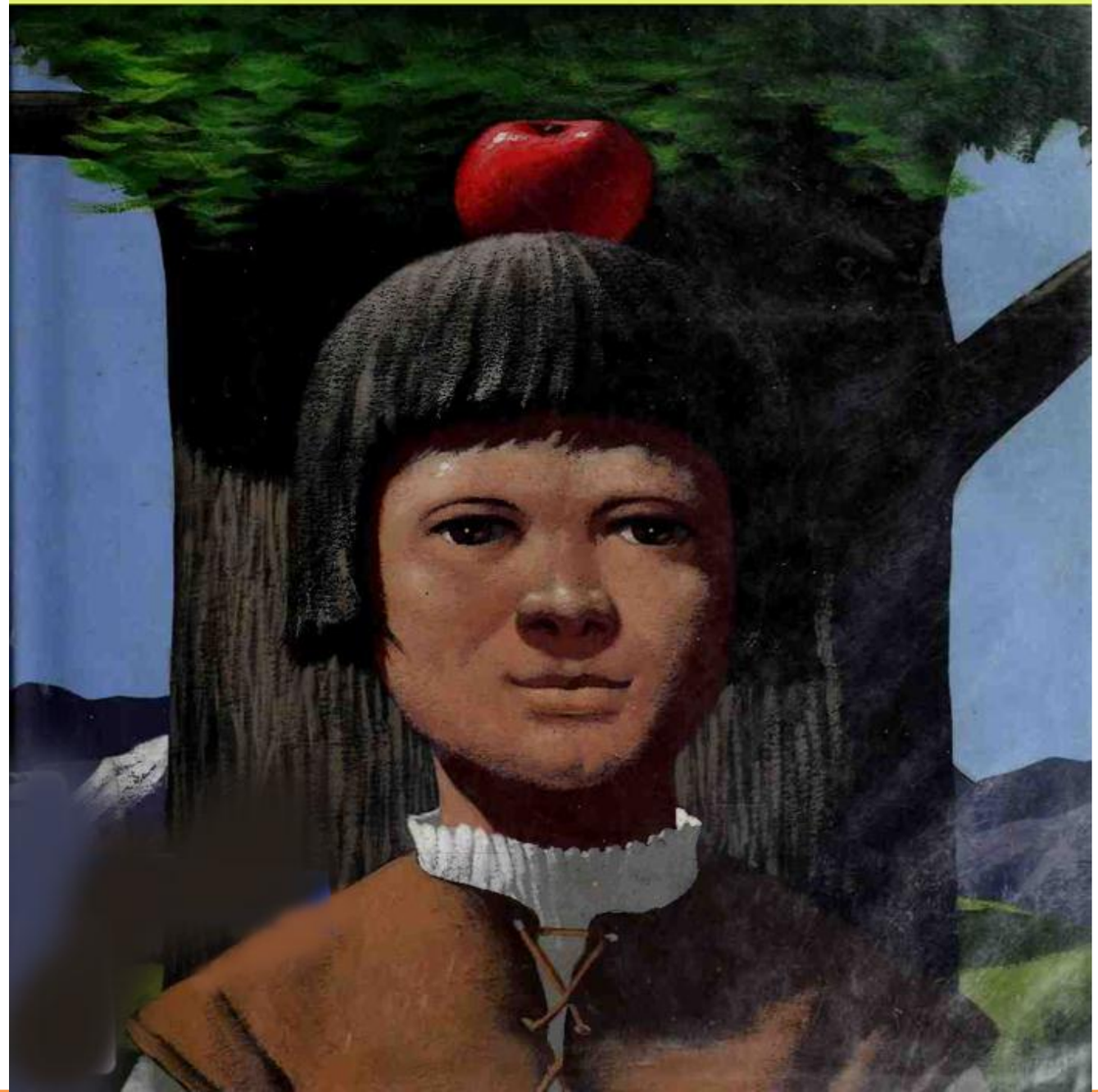

किंवदंती के अनुसार चौदहवीं शताब्दी की शुरुआत में, जब ऑस्ट्रिया के हैप्सबर्ग राजघराने के शासक स्विस जनता का शोषण कर रहे थे, तब एक इन्सान इन शोषकों के विरुद्ध खड़ा हुआ। उसका नाम था विलियम टैल।

विलियम टैल इस बात से बेहद नाराज़ था कि उसके देश के लोगों को राज्यपाल की टोपी के सामने घुटने टेकने पर मजबूर किया जाता था। उसने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। उसे काठोर सज़ा मिली : उसके बेटे के सर पर एक सेब रख दिया गया, और टैल से कहा गया कि वह उस सेब पर निशाना साधे। अगर उसका तीर निशाने पर सही लगता है तो राज्यपाल की टोपी कस्बे के चौक से हटा दी जायेगी। निशाना चूकने पर उसके बेटे जेम्मी की जान जा सकती है ...

चुस्त शब्दों व खूबसूरत चित्रों के द्वारा लियोनार्ड एवेरेट फिशर विलियम टैल की कहानी को पेश करते हैं, जिसे वे 'आज़ादी का रूपक' कहते हैं।

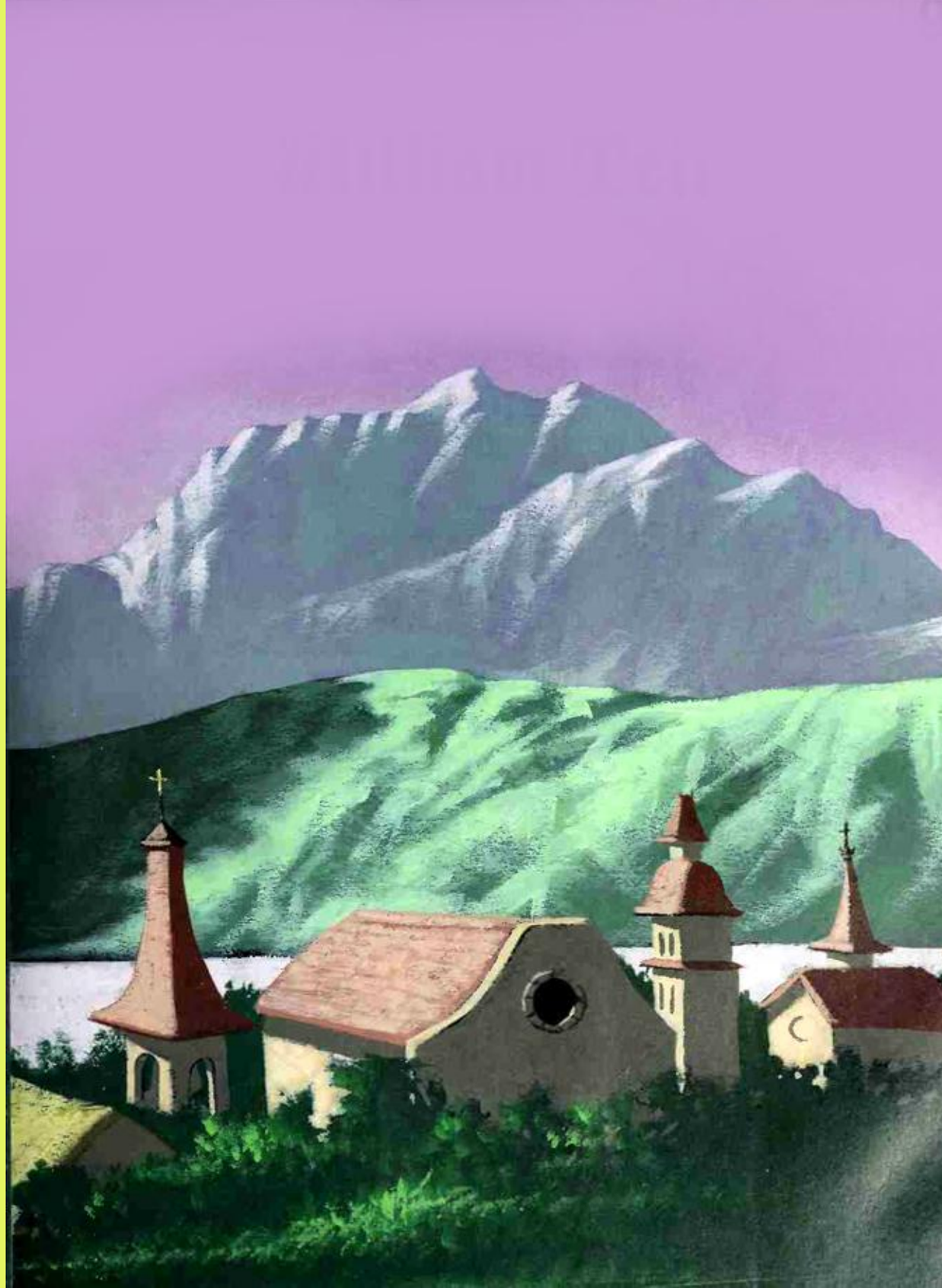

विलियम टैल

लियोनार्ड फिशर

हिंदी : पूर्वा

गेस्सलर चौक के काफी ऊपर लटका टाउन हॉल का घंटा ज़ोरशोर से बज रहा था। उसकी आवाज़ पहाड़ों की चोटियों से टकरा कर यों गूँज रही थी मानो दर्जन भर घंटे एक साथ बज रहे हों। लोग चौक की ओर भागे चले आये।

"सुनो ,सुनो सुनो! एक फ़रमान सुनो," हरकारा फ़रमान खोलते हुये बोला।

"मौजूद लोगों के मार्फ़त सब जान लें, आज दोपहर के बाद से उरी के केंटन में बसे आल्टडॉर्फ़ कस्बा, जिस पर हैप्सबर्ग राजघराने के बादशाह एल्बर्ट प्रथम का राज है, उसके सभी नागरिक, मय दस साल और उससे बड़े बच्चों के, गेस्सलर चौक के खंभे पर टंगी माननीय राज्यपाल हेस्सलर की टोपी के सामने घुटने टेकेंगे। ऐसा न करने का नतीज़ा होगा तुरंत और सख्त सज़ा।

"हमारे प्रभु ईसा के 1307 वर्ष में, जुलाई माह की पहली तारीख के दिन किये गये दस्तखत और मुहर के साथ।"

"बड़ा ज़ालिम है, यह हरमन गेस्सलर। विलियम टैल ने गुर्रा कर अपने बेटे जेम्मी से कहा। "पूरा तानाशाह, अगर कभी हुआ हो तो वही है।"

टैल एक नामचीन शिकारी और निशानेबाज़ था, और अपने परिवार के साथ पास ही बसे बरगलेन में रहता था। उस दिन वह अपने बेटे जेम्मी के साथ जंगल में जाने के लिये आल्टडॉर्फ़ से गुज़र रहा था जब उसने फरमान सुना।

"अगर मेरा बस चलता, "एक औरत फुसफुसायी, "तो उस शाही खंभे पर खुद हेर गेस्सलर होता उसका टोप नहीं।"

"श्श्श," भीड़ में किसी ने चेतावनी दी। "चुपचाप घुटने टेको और चुप रहो।

आल्टडॉर्फ़, बरगलेन या उरी के किसी भी और कस्बे में कोई, किसी भी बात पर ज़ोर से नहीं बोलता था। क्योंकि हेर गेस्सलर के जासूस हर जगह थे। सच तो यह था कि गलत समय छींकने का मतलब भी दस दिन की जेल हो सकता था।

दोपहर के कुछ पहले हेर गेस्सलेर की अगुवाई में, अफसरों और सिपाहियों की एक टोली आल्टडॉर्फ़ के टाउन हॉल से निकली और बीच चौक में आ पहुँची। वहाँ उन्होंने ऊँचे खंभे पर टांगे गेस्सलर साहब के टोप को ऊपर उठते देखा।

"सावधानी से! सावधानी बरतो बेवकूफों!" आहिस्ता से खंभे को उठते देख हेर गेस्सलर झड़पे। "अगर मेरा टोप नीचे गिरा तो खैर नहीं, सख्त सज़ा मिलेगी।"

जैसे ही टाउन हॉल की घड़ी बारह घंटे टनटनाने लगी, हेर गेस्सलर खंभे के पास रखी कुर्सी पर आ जमे। सामने से गुज़र रहा पहला आदमी आया, उसने हेर गेस्सलेर की टोप के सामने घुटने टेके और तब तेज़ी से अपने रास्ते बढ़ गया।

"आहा," वे बोले , "बहुत खूब। बेशक बहुत खूब।"

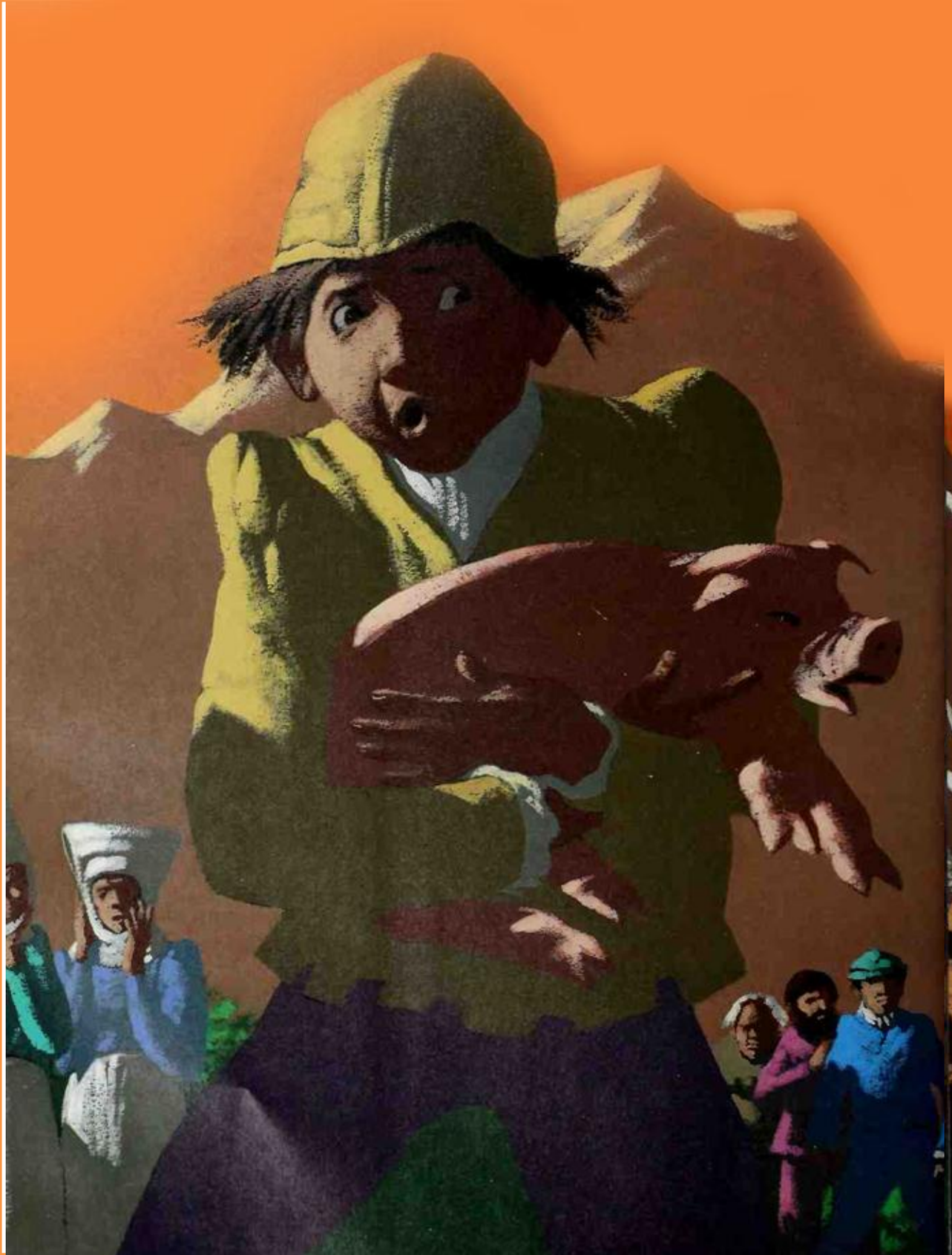

लोग इधर से और उधर से आते-जाते, घुटने टेकते, और जितनी जल्दी हो सके चौक पार कर लेते। किसी की इतनी हिम्मत न थी कि वह हेर गेस्सलेर के चेहरे को नज़र उठा कर देखता। उनका हिकारत से भरा चेहरा ऐसा था कि दूर खड़ा हिरन भी डर कर भाग जाता।

पर टाउन हॉल की घड़ी पूरे बारह घंटे बजाती उसके पहले ही एक नौजवान एक सूअर को पहुँचाने की जल्दबाज़ी में वहाँ से गुज़रा और घुटने टेक कर सजदा करना भूल गया।

"क़ानून तोड़ने वाले को फ़ौरन कैद करो!" गेस्सलर चीखा। "उसके सूअर को भी कैद करो!" सिपाही नौजवान के चारों ओर घिर आये। उन्होंने उसके सूअर को हथिया लिया और नौजवान को बेड़ियों में तब भी जकड़ दिया, जब वह एक और मौका देने की गुहार कर रहा था।

"कभी नहीं!" हेर गेस्सलर उसके पीछे चीखे।

नौजवान को रहम की गुहार लगाते चौक से घसीट कर ले जाया गया ही था, कि एक किशोर चौक के पार दौड़ता नज़र आया, उसकी बड़ी बहन उसके पीछे दौड़ रही थी।

"फ़ौरन घर चलो!" वह चिल्लायी।

"नहीं!" लड़के ने जवाब दिया। देखते ही देखते दोनों हवा के झोंके की तरह हेर गेस्सलर के सामने से गुज़र गये। अफ़सोस कि वे भी घुटने टेकना भूल गये।

"पकड़ो उन दोनों को!" हेर गेस्सलर ने हुकुम दिया।

लड़के और उसकी बहन को भी ज़ंजीरों में जकड़ ले जाया गया।

दिन भर आदमी, औरतें, और दस साल से बड़े बच्चे गेस्सलर चौक से आते -जाते रहे। सबने हेर गेस्सलर के टोप के सामने घुटने टेके - कुछ ने तो तीन, चार, या और भी अधिक बार।

"यह बेहद घटिया और बेवकूफी भरा है ," जंगल से घर को लौटते समय विलियम टैल ने अपने बेटे जेम्मी से कहा।

"गेस्सलर उरी का राज्यपाल हो सकता है, पर हम उसके गुलाम और पिछलग्गू तो नहीं हैं। मैं कभी भी उसके या उसकी टोपी के सामने घुटने नहीं टेकूँगा।

विलियम टैल और जेम्मी धीमी रफ़्तार से खंभे के सामने से गुज़रे। हेर गेस्सलर अब भी अपनी कुर्सी पर बैठे थे ताकि जो भी घुटने टेके बिना गुज़रे उस पर कूद पड़ें। "ऐ तुम दोनों, विलियम टैल, जेम्मी टैल!" वे ज़ोर से बोले। "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई कि तुम मेरे टोप के सामने से बिना घुटने टेके गुज़रो? कानून जानते हो ना? मैं कहता हूँ घुटने टेको!"

"घुटने टेको तुम कहते हो। मैं कहता हूँ बढे चलो। न मैं,ना ही मेरा बेटा किसी तानाशाह के टोप के सामने घुटने टेकेंगे।

हेर गेस्सलर गुस्से से काँपने लगे। आस-पास खड़े लोगों में सन्नाटा छा गया, कोई हिला तक नहीं। ऐसा लगा मानो अचानक पूरा चौक आँखें फाड़े हुये संगमरमर से बने बुतों से भर गया हो।

"गिरफ्तार करो इन दोनों को!" हेर गेस्सलर गुर्राये। "कैदखाने में धकेल दो इन्हें! कोड़े मारो! नाखून नोच डालो! ना, ना। रुको। मुझे एक बेहतर बात सूझी है।

"तो तुम कहते हो कि मैं तानाशाह हूँ, हेर टैल? कानून आखिर कानून होता है। पर मैं तुम्हें दिखा दूँगा कि मैं कितना निष्पक्ष और नेक इन्सान हूँ। तुम्हें तुम्हारी हुकुमउदूली और गुस्ताख़ी के लिये मैं यह सज़ा देता हूँ कि तुम अपने बेटे के सिर पर रखे एक सेब को एक एकलौते तीर से बेधो। तुम्हें साठ कदम की दूरी से तीर चलाने का केवल एक मौका मिलेगा। अगर निशाना सही लगता है तो तुम्हें आज़ाद कर दिया जायेगा। इतना ही नहीं, किसीको भी इसके बाद कभी मेरे टोप के सामने घुटने नहीं टेकने पड़ेंगे।

"पर अगर तीर निशाना चूक जाता है, तो तुम्हारा बेटा या तो तुम्हारे हाथों मारा जायेगा या मेरे हाथों आज़ाद कर दिया जायेगा। पर तुम, हेर टैल, कैदखाने में जाओगे जहाँ हमेशा-हमेशा के लिये सड़ोगे। और मेरा नया कानून बरक़रार रहेगा। "

बुत बनी भीड़ में हरकत आयी।

विलियम टैल ने जेम्मी की ओर देखा। उसका दिल ज़ोरों से धड़क रहा था। अगर उसका निशाना चूक जाये तो?

उसने तय कर लिया कि वह तीर निशाने से काफी दूर चलायेगा और जेल चला जायेगा ताकि उसके बेटे को चोट पहुँचाने का खतरा न रहे। इस तरह जेम्मी ज़िंदा बचेगा और रिहा कर दिया जायेगा। पर आख़िर क्या हेर गेस्सलर पर भरोसा किया भी जा सकता है, उसने सोचा।

"आपको यह करना होगा पिताजी," जेम्मी ने चिरौरी की, "सभी लोगों के लिये। मुझे कोई डर नहीं है। आप उरी के सबसे बेहतरीन निशानेबाज़ हैं। "

विलियम टैल ने पल भर सोच कर फैसला किया। "ठीक है जेम्मी। मैं करूँगा," उसने कहा।

हेर गेस्सलर के चहरे पर एक कुटिल मुस्कान छा गयी।

गेस्सलर के सिपाहियों में से एक ने जेम्मी को एक चौड़े पेड़ के सामने खड़ा किया। दूसरे सिपाही ने जेम्मी के सिर पर एक लाल सेब रखा।

साठ कदम की दूरी पर विलियम टैल ने अपने कमान पर एक तीर रखा। पर उसके लबादे में एक दूसरा तीर छुपा था।

भीड़ कुछ पीछे हटी। हेर गेस्सलर अपनी कुर्सी पर कुछ आगे झुके।

विलियम टैल ने समय लिया। अपनी आँखें सिकोड़ उसने उस दिशा को देखा जिससे तीर को जाना था। उसने जेम्मी के सिर पर धरे सेब को ध्यान से देखा। तब अपनी कमान को सीध पर ऊपर उठाया ताकि तीर सेब के बीचोंबीच रहे।

विलियम टैल ने तीर चला दिया।

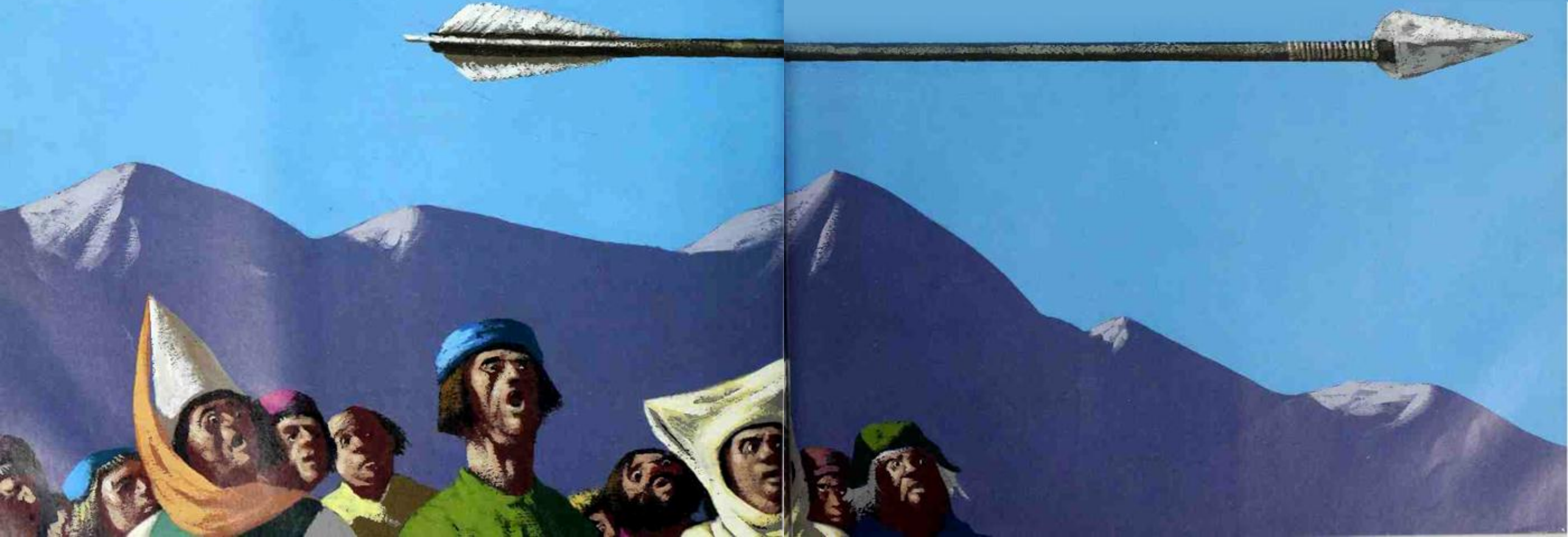

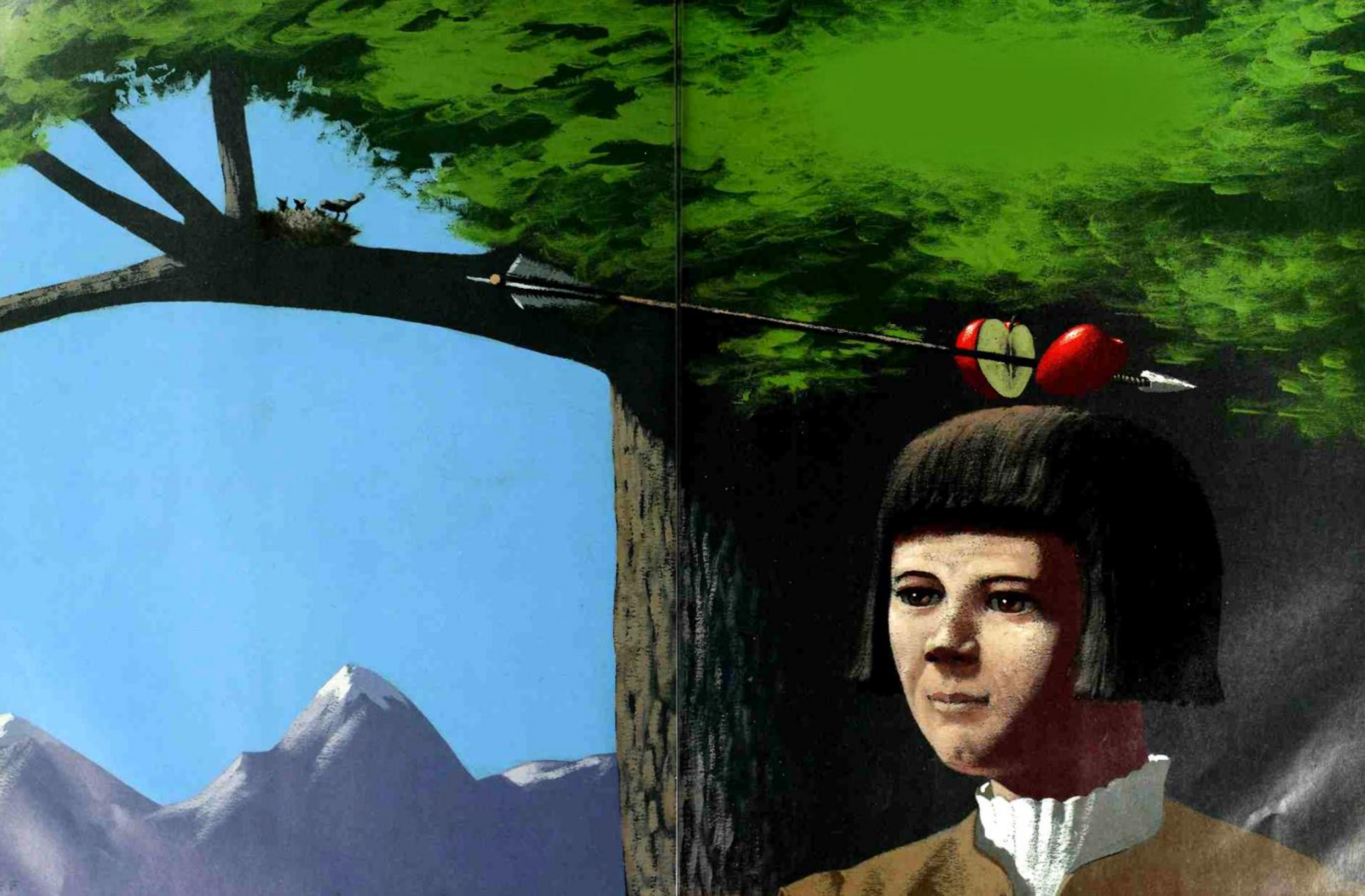

भीड़ जय-जयकार कर उठी। जेम्मी मुस्कुराया। हेर गेस्सलर कुर्सी पर लस्त-पस्त हो गये।

जैसे ही विलियम टैल और जेम्मी खुशी से भरे तालियाँ पीटते लोगों का शुक्रिया अदा करने झुके, विलियम के लबादे में छिपा तीर ज़मीन पर आ गिरा।

हेर गेस्सलर अपनी कुर्सी से उछल पड़े, "सिर्फ एक तीर की अनुमति थी, हेर टैल दूसरे की ज़रूरत तुम्हें किस लिए थी?"

"दूसरा आपके लिए था हेर गेस्सलर। अगर पहला तीर मेरे बेटे को नुकसान पहुँचाता, तो मैं दूसरे से आपके शैतानी दिल को चीर देता। "

"हत्यारा!" गेस्सलर चीखा। "इसे गिरफ्तार करो। कानून कायम रहेगा! लोगों को मेरे टोप के सामने बाकायदा घुटने टेकने होंगे।“

विलियम टैल को ज़ंजीरों में जकड कर ले जाया गया।

सप्ताह भर बाद पहाड़ों पर कई घंटे एक साथ टनटनाते गूंज उठे। आल्टडॉर्फ़, बरगलेन, और उरी के तमाम दूसरे कस्बों के लोगों ने एक चौंकाने वाली खबर सुनी। हरमन गेस्सलर की मौत हो चुकी है।

विलियम टैल, उसे गिरफ्तार करने वाले सिपाहियों के चंगुल से भाग निकला था। बेड़ियों से आज़ाद होने के बाद वह लूज़र्न झील में तूफ़ान के बीच घिरी उस किश्ती से कूद गया, जिसमें उसे कैदखाने ले जाया जा रहा था। इस पर गेस्सलर खुद अपनी अगुवाई में सिपाहियों की टोली के साथ उसकी तलाश में निकला।

जंगल में एक लचीले पेड़ की शाखाओं से तराशे तीर और कमान से लैस हो घात लगा कर विलियम गेस्सलर की बाट जोहने लगा। जब सिपाहियों की टोली एक संकरे रास्ते से गुज़र रही थी, विलियम ने बस एक ही तीर से गेस्सलर के दिल को बेध दिया।

एक क्रूर तानाशाह से लोगों को छुटकारा मिल गया।

विलियम टैल एक नायक की तरह घर लौटा।

लियोनार्ड एवरेट फिशर ने बच्चों के लिये कई उम्दा किताबें रची हैं। बाल साहित्य में योगदान करने के लिये उन्हें कई बार सम्मानित किया गया है। १९९५ में उन्होंने मे हिल अर्बुथनोट व्याख्यान दिया था; १९९१ में उन्हें कैथोलिक लाइब्रेरी एसोसिएशन का रेगिना मेडल और मिनेसोटा विश्वविद्यालय के केरलन पुरस्कार, दोनों से नवाज़ा गया; १९८९ में वॉशिंगटन पोस्ट और वाशिंगटन, डी.सी. की चिल्ड्रेन्स बुक गिल्ड ने उन्हें नॉनफिक्शन पुरस्कार से सम्मानित किया। श्री फिशर अपनी पत्नी के साथ वेस्टपोर्ट, कनेटिकट में रहते हैं।